Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLV

निजी संग्रह में संग्रहित मौलिक स्त्रोत (निजी संग्रह : धर्मलाल शर्मा)

डॉ. भगवती नागदा*

* सहायक आचार्य (इतिहास) गुरूनानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – राजस्थान के इतिहास में मेवाड़ की वीर भूमि अपने अप्रतिम शौर्य और आत्माभिमान के कारण विश्व विख्यात रही है। मेवाड़ को शिविजनपद[1] प्राग्वाट, मेदपाट, उदयपुर आदि नामों से जाना जाता है। मेवाड़ 'राजवंश के राजाओं ने सदैव अपनी मान–मर्यादा की रक्षा की है। यहाँ के कर्मनिष्ठ महाराजाओं ने विषम' परिस्थितियों में भी अपनी प्रजा का ध्यान रखा। मेवाड़ की सुन्दरता में अभिवृद्धि के लिए महाराजाओं ने कई रचनात्मक कार्य किए जो वर्तमान में भी असंख्य पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। उदयपुर में जनकल्याणकारी कार्य यथा उद्यान, स्कूल, अनाथालय, चिकित्सालय आदि का निर्माण किया गया। उद्यानों में नालियों तथा फव्वारों की व्यवस्था की गई। उद्यान के चारों ओर दीवारों का निर्माण किया गया। यहाँ के महाराणा उद्यानों को फलों के वृक्षों तथा फुलों से सुसज्जित करने के लिए बाहर से जैसे सहारपुर, कश्मीर, मद्रास आदि से बीज मंगवाते थे।[2] पौधों के साथ बड़, नीम तथा पीपल के वृक्ष भी लगवाए जाते थे।[3] उद्यानों में औषधीय वृक्षों को भी लगवाया जाता था, उद्यानों के निर्माण के लिए महाराणाओं ने सामन्तों, ब्राह्मणों, वेश्यों तथा मालियों को उदयपुर के हवाले के अन्दर व बाहर कई बीघा भूमि आवंटित की।[4]

हवाले शहर के अन्दर व बाहर स्थित थे सूरजपोल के बाहर का हवाला, हाथीपोल के बाहर का हवाला, हाथीपोल के अन्दर का हवाला आदि कहलाते थे।[5] इसके अलावा वृक्षों के नाम पर या अन्य पहचान चिन्ह के नाम पर भी हवालों का नामाकरण किया जाता था यथा पेमा का हवाला, इमली का हवाला आदि।[6]

मेवाड़ में उद्यान लगवाने के लिए भूमि को आवंटित किया जाता था तथा भू–स्वामियों को उनकी बाड़ियों तथा बावड़ियों के बदले अन्यत्र जमीन या गांव थे। दिए जाते थे इस बात की पुष्टि धर्मलाल शर्मा के निजी संग्रह से प्राप्त 'परवाने' से होती है[7]–

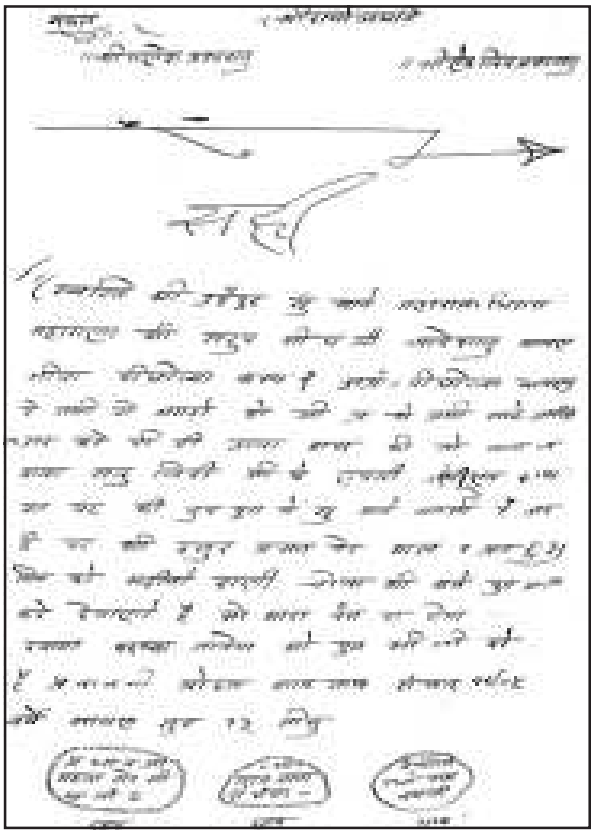

परवाने का मूल पाठ निम्नलिखित है–

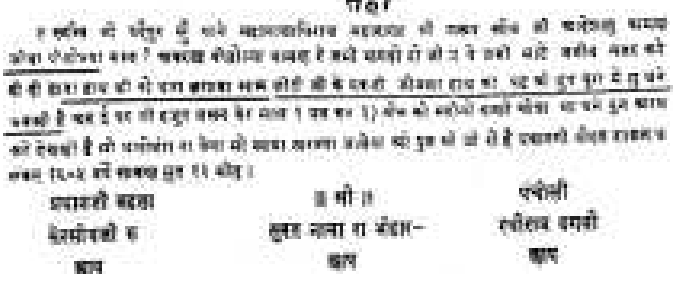

सही

जीवा पीछोल्या नामक ब्राह्मण से उद्यान लगवाने के लिए भूमि ली गई लेकिन कुछ समय सरकार तथा भू-स्वामी के मध्य वाद-विवाद चला। महाराणा स्वरूप सिंह की उदार प्रवृत्ति के कारण उसे उसकी भूमि की एवज में दूधपूरा (टेकरी) में जमीन दे दी गई। महाराणा सज्जन सिंह, संग्राम सिंह एवं फतहसिंह के समय भी कई बाड़ियों का निर्माण हुआ[8] यथा सहेलियों की बाड़ी, शिकार बाड़ी, रजगा बाड़ी, वेणीराम विसर की बाड़ी आदि। इनके समय कई बागों जैसे चम्पा बाग, राम बाग, गोकुल बाग, जवान बाग, रस बाग, समोर बाग, भुवाणा बाग, जगमन्दिर व जगनिवास बाग आदि का भी निर्माण हुआ।[9]

मेवाड़ में स्वास्थ्य रक्षा हेतु कई अस्पताल खोले गए। महाराणा सज्जन सिंह के समय मेवाड़ में अनाथ लोगों के लिए अनाथालय खोले गये। मानसिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के लिए पागलखाने की व्यवस्था की गई।[10] महारणा फतहसिंह के काल में खांजीपीर नामक स्थान पर अनाथालय एवं पागलखाना खोला गया।[11]

धर्मलाल शर्मा के निजी संग्रह से एक कागजात प्राप्त हुआ है जिसमें हाई स्कूल व अनाथालय बनवाने की बात कहीं गई है-[12]

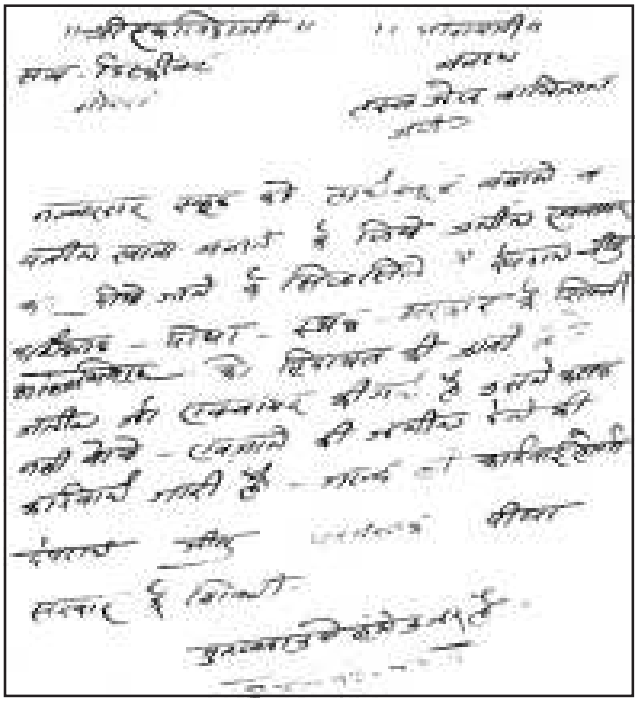

कागजात का मूल पाठ निम्नलिखित है -

|| श्री एकलिग जी ||　　　　||श्री रामजी||

सब डिस्ट्रीक्ट　　बनाम　　हस्ब जेल काबिज़ान

गीरवा　　　　　　　　　　जमील

नम्बरदार स्कूल को हाईस्कूल बनाने व यतीमखाना बनाने के लिए जमीन एक्वायर कर दीय जाने के सिलसिले में देवराम- जीतू- धर्मलाल- पीथा- स्थल सरकार के शिकमी काश्तकार को हिदायत दी जाती है के जमीन जो एक्वायर की गई है उसमे फसल नहीं बोवे - एवजाने की जमीन देने की कार्रवाई जारी है- जल्द ही कार्रवाई होगी

देवराम, जीतू, धमरलाल, पीथा

सरकार के शिकमी

मुतजाहुएहमेउजरहै

24-12-42

1942 में नम्बरदार स्कूल को हाई स्कूल बनाने तथा अनाथालय (यतीमखाना) बनाने के लिए धर्मलाल शर्मा की भूमि का अधिग्रहण किया गया। देवराम, जीतू, धर्मलाल, पीथा तथा स्थल के काश्तकारों को इस भूमि की एवज में दूसरी जगह भूमि दी जाएगी। इस सम्बन्ध में कार्यवाही चल रही है। यह हिदायत दी गई कि वह अपनी भूमि पर फसल नहीं बोए।[13] मेवाड़ में देवस्थान विभाग भी अनाथ लोगों की मदद करते थे[14] यतीमखाना के निर्माण से दरिद्र एवं अनाथ लोगों को आश्रय मिलता था। अत: महाराणाओं की उदार एवं सहिष्णुता पूर्ण नीतियों के कारण मेवाड़ का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास अनवरत चलता रहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द्र : 'उदयपुर राज्य का इतिहास' भाग-1, पृ. 1-2।
2. पडाखा बही, वि.सं. 1947, पृ. 191।
3. शोध पत्रिका, वर्ष 35, अंक 2, (प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर)
4. वही
5. बख्शीखाना बही, क्र.सं. 666 वि.सं. 1902 (राज. राज्य अभिलेखागार, उदयपुर)
6. वही
7. महाराणा स्वरूप सिंह कालीन परवाना (श्री धर्मलाल शर्मा के निजी संग्रह से)
8. उदयपुर गाइड एवं सिटी मेप (पर्यटन गाईड़)
9. बही, क्रसं. 666 वि.सं. 1902 (राज. राज्य अभिलेखागार, उदयपुर)
10. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द्र : 'उदयपुर राज्य का इतिहास' भाग-2, पृ. 837, श्यामलदास : वीर विनोद, भाग-2, खण्ड-3, पृ. 2196।
11. शर्मा बी.एन. : हकीकत बहिड़ा 'महाराजा फतेहसिंह जी ऑफ उदयपुर', महाराणा मेवाड़ पुस्तकालय, सिटी पैलेस, उदयपुर
12. धर्मलाल शर्मा के निजी संग्रह से प्राप्त कागजात
13. वही
14. देवस्थान विभाग की नियमावली (वार्षिक शाखा), मार्च 1992

****